



भूगोल में पुनर्जागरण काल की उपलब्धियां

भोलेंद्र प्रताप सिंह

असि0 प्रोफे0, भूगोल विभाग, पी0जी0 कालेज, गाजीपुर (उ0प्र0) भारत।

Received- 05.08.2020, Revised- 09.08.2020, Accepted - 13.08.2020 E-mail: bholendrapratapbbs1976@gmail.com

सारांश : समुद्री यात्राओं के माध्यम से पूर्व प्रचलित मिथ्या मान्यताओं व पूर्वा ग्रहों का खण्डन हुआ पृथ्वी का गोलाकार स्वरूप स्थापित हो गया। मेगलन की समुद्री यात्रा से पृथ्वी के गोलाकार स्वरूप से सर्वमान्य स्वीकृति प्राप्त हुई। चूंकि इस समय तक टालेमी के मानचित्र का ही प्रयोग होता था। समुद्री यात्राओं से इसकी अशुद्धियों का पता चला। टालेमी के मानचित्र में हिन्दमहासागर को बन्द महासागर के रूप में चित्रित किया था। जबकि वास्तव में यह एक खुला महासागर है। वास्को डी गामा ने दक्षिण अफ्रीका का चक्कर लगाकर भारत पहुंचा तो टालेमी के हिन्दमहासागर के बन्द सागर होने की धारणा का खण्डन हुआ। अमेरिगो व कोलम्बस की यात्रा से अमेरिका महाद्वीप की खोज हुई जो न केवल न एक महत्वपूर्ण उपलब्धि थी, बल्कि विश्व की संस्कृति, सभ्यता व राजनीति पर दूरगामी प्रभाव पड़ा। कैंटन कुक ने 1768 से 1778 के मध्य हिन्द व प्रशान्त महासागर के उन क्षेत्रों की खोज निकाला जो अब तक अनजान थे।

कुंजीशब्द— मिथ्या, खण्डन, गोलाकार, समुद्री यात्रा, सर्वमान्य, मानचित्र, अशुद्धियां, महासागर, संस्कृति, सभ्यता।

कुक ने ही आस्ट्रेलिया महाद्वीप की खोज की। इस प्रकार लगभग समस्त पृथ्वी की खोज हो गई। अब आवश्यकता थी शुद्ध मानचित्र की। इस सन्दर्भ में बाल्डजीमूलर का प्रयास सराहनीय रहा। इन्होंने 1507 में विश्व मानचित्र बनाया था जिसमें पहली बार अमेरिका महाद्वीप को प्रदर्शित किया गया। ये मानचित्र 2.44x1.37 मीटर के आकार के 12 पन्नों पर छापे गये हैं। इसके बाद डच मानचित्र कार ग्रेहार्ड मरकेटर (1512-1594ई0) ने विश्व मानचित्र बनाकर मानचित्र कला का टालेमी के प्रभाव से मुक्त कर दिया। इन्होंने पूर्ववर्ती मानचित्रों का गहन अध्ययन किया। बहुत सारी सूचनायें इकट्ठा की नाविकों व यात्रियों के यात्रा विवरणों का अध्ययन किया। तत्पश्चात् 1569 में शुद्ध दिशा एवं स्थलाकृतिक बेलनाकार प्रक्षेप की रचना की।

इसमें टालेमी के मानचित्र के भूलों का निवारण किया गया है। इसमें यूरोप, एशिया, अफ्रीका, उ0वद0 अमेरिका महाद्वीपों को पृथक-पृथक प्रदर्शित किया है। यह मानचित्र नौ संचालन के लिए बहुत ही महत्वपूर्ण सिद्ध हुआ क्योंकि नाविक दो स्थानों के मध्य एक निश्चित कोण पर जा सकता है। इस प्रक्षेप का महत्व इसी से स्पष्ट हो जा रहा है कि शुद्ध आकृति एवं शुद्ध दिशा प्रदर्शित करने के लिए आज भी मरकेटर प्रक्षेप का प्रयोग किया जाता है।

मानचित्र निर्माण के साथ ही कई विद्वान भौगोलिक अध्ययन में संलग्न थे। इनमें पीटर एपियन, म्यून्स्टर, क्लूवेरीयस व वैरेनियस प्रमुख हैं। एपियन 1405-1552 टालेमी, स्ट्राबों व अरस्तू के भौगोलिक मान्यताओं से प्रभावित थे। इन्होंने भूगोल में स्थलाकृतिक अध्ययन और क्षेत्र

अध्ययन दोनों को पृथक किया। यह भी पृथ्वी को ब्रह्माण्ड के केन्द्र में मानते थे तथा सूर्य व अन्य ग्रह पृथ्वी चतुर्दिक चक्कर लगाते हैं। जिनसे दैनिक एवं ऋतुवत परिवर्तन होते हैं। इन्होंने अरस्तू द्वारा वर्णित पृथ्वी के पांच जलवायु खण्डों को स्वीकार किया है। इन्होंने दो पुस्तकें लिखी हैं। प्रथम Astronomican Caesarum ,oa Cosmographical Liber । इस समय के दूसरे प्रमुख भूगोलवेत्ता म्यून्टर (1489-1552) थे। इन्होंने Cosmo graphical universiti नामक पुस्तक लिखी। इन्होंने विश्व को यूरोप, एशिया एवं अफ्रीका नामक तीन खण्डों में विभक्त किया है। यह भी पृथ्वी को गोलाकार मानते थे। स्थल रूपों के विकास में नदियों की भूमिका को स्वीकार किया है।

वरेनियस-(1622-1650ई0)— सत्तरहवीं सदी का यह सर्वाधिक महत्वपूर्ण भूगोलवेत्ता था, जिसका जन्म जर्मनी (1622) में हुआ था। इन्होंने कोनिज्जवर्ग विश्वविद्यालय में 1643-1645 के मध्य तथा लीडेन विश्वविद्यालय में 1645-1649 के मध्य अध्ययन किया था। यहाँ पर इन्होंने गणित एवं चिकित्सा विज्ञान का अध्ययन किया। किन्तु अपने भूगोलवेत्ता मित्रों व व्यापारी यात्रियों से प्रभावित होकर भूगोल के क्षेत्र में उतरे। कम आयु में ही वह भूगोल में तो योगदान दिया वह मानक के रूप में स्वीकार किया गया। इन्होंने उस समय उपलब्ध भौगोलिक ज्ञान का बड़े ही दार्शनिक चैतन्य (Philosophical spint) से व्याख्या की तथा पुस्तकें लिखी। 1649 में वह (Descripto Regni Japoniae) जापान का भूगोल नामक पुस्तकें लिखी। इस पुस्तकें में कुल पांच खण्ड हैं जिसमें जापान का सामान्य



वर्णन, जापान के धर्म, स्थान और लोगों का विवरण है। 1650 में इनका सर्वाधिक महत्वपूर्ण पुस्तक सामान्य भूगोल (Geographia Generalis) प्रकाशित हुई। पुस्तक में उन्होंने उपलब्ध ज्ञान के आधार पर भूगोल के सामान्य सिद्धान्तों का वर्णन वैज्ञानिक आधार पर किया है। In 1650 appeared his Geographia Generalis, in which he endeavoured round to lay down the general principles of the subject on a wide scientific basis, according to the knowledge of the day. डिकिन्सन ने वरेनियस के विचारधाराओं को उपलब्ध ज्ञान के आधार पर अधिक विकसित बताया है। चूंकि वरेनियस ने गणितीय अध्ययन में भी पारंगत थे। अतः उन्होंने भूगोल के गणितीय पक्ष पर पर्याप्त ध्यान दिया है और भूगोल को मिश्र गणित मानते थे। इनकी पुस्तक सामान्य भूगोल (Geographical Generalis) से इनकी भौगोलिक दृष्टि स्पष्ट होता है। 'सामान्य भूगोल' नामक पुस्तक में यह भूगोल के दो भाग बताये हैं—

1. सामान्य भूगोल—(General Geography)
 2. विशेष भूगोल. (Special Geography)
- वरेनियस के विचार इतने संतुलित थे कि भूगोल के दोनों विभागों में किसी को कम या अधिक महत्व नहीं दिया। इनके अनुसार दोनों अर्थात् सामान्य और विशेष भूगोल एक दूसरे पर निर्भर हैं। सामान्य भूगोल पृथ्वी को एक इकाई मानकर अध्ययन करता है। इनमें भूमंडलीय तत्वों एवं लक्षणों का अध्ययन किया जाता है जिन्हें प्राकृतिक नियमों द्वारा समझा जा सकता है। यह सामान्य नियमों, सिद्धान्तों व संकल्पनाओं के निर्माण से सम्बन्धित है। यह सामान्य भूगोल ही आगे चलकर क्रमबद्ध भूगोल कहलाया। वरेनियस ने सामान्य भूगोल को निम्न तीन भागों में विभक्त करते हैं—

सामान्य भूगोल—

1. निरपेक्ष भूगोल— यह पृथ्वी को एक इकाई मानकर इसके गणितीय तथ्यों जैसे आकार, विस्तार, गति एवं माप आदि का परीक्षण करता है।

2. सापेक्ष भूगोल— इसमें सूर्य व नक्षत्रों का पृथ्वी पर पड़ने वाले प्रभाव, जलवायु व मौसम विभिन्न स्थानों पर दिन की अवधि आदि का अध्ययन किया जाता है। अर्थात् पृथ्वी का अन्य ग्रहों विशेष कर सूर्य से सम्बन्ध का अध्ययन किया जाता है।

3. तुलनात्मक भूगोल— इसमें पृथ्वी के विभिन्न भागों का तुलनात्मक अध्ययन किया जाता है। यह पृथ्वी के विभिन्न विभागों का संक्षेप में वर्णन करता है। साथ ही इसी भाग में नौसंचालन के सिद्धान्तों की भी व्याख्या की गई है।

विशेष भूगोल— वरेनियस का विशेष भूगोल ही

आगे चलकर प्रादेशिक भूगोल कहलाता है। इसमें किसी क्षेत्र विशेष का अध्ययन किया जाता है। इस खण्ड के निम्न तीन भाग हैं—

1. खगोलीय अध्ययन— इसमें क्षेत्र विशेष की वायुमंडली दशाये विशेषकर जलवायु के अध्ययन को सम्मिलित किया गया है।

2. पार्थिव अध्ययन— इसमें क्षेत्र की मानवीय विशेषताओं जैसे शारीरिक लक्षण, रूप-रंग, परम्परा, रीतिरिवाज, आर्थिक क्रियाओं आदि का अध्ययन किया जाता है। इस प्रकार वरेनियस ने अपने पुस्तक Geographia Generalis के माध्यम से न केवल भूगोल की विषयवस्तु बल्कि अध्ययन पद्धति को भी निरूपित कर दिया। वरेनियस ने भूगोल को भूतत्त्व का अध्ययन कहकर इसमें अध्ययनों एवं अध्यापन वस्तु की व्याख्या की और संकेत भी दिया जिसमें प्राकृतिक एवं मानवीय दोनों तत्वों का सम्मिलित किया गया। दूसरी ओर इन तत्वों का अध्ययन सामान्य एवं विशेष भूगोल (क्रमबद्ध एवं प्रादेशिक भूगोल) में करके पद्धति को भी सुनिश्चित कर दिया। कुछ विद्वान इसे क्रमबद्ध बनाम प्रादेशिक भूगोल के द्वन्द का प्रारम्भ मानते हैं। वास्तविकता यह है कि वरेनियस ने कहीं भी इन्हें एक दूसरे के विपरीत या समकक्ष स्थापित नहीं किया बल्कि ये दोनों परस्पर पूरक हैं। क्योंकि प्राकृतिक एवं मानवीय तथ्यों की व्याख्या एक समान ढंग से नहीं किया जा सकता। प्राकृतिक घटनायें पृथ्वी एवं सूर्य सम्बन्धों से घटित होती है अतः उन्हें प्राकृतिक नियमों से ही समझा जा सकता है। जबकि मानवीय प्रक्रियायें व विशेषतायें क्षेत्र विशेष के परिस्थैतिकी में ही समझा जा सकता है अतः इसके लिए प्रादेशिक स्तर पर अध्ययन अनिवार्य है। किन्तु इन दोनों के मध्य कोई द्वन्द नहीं है। क्योंकि किसी क्षेत्र की विशेष कर परिस्थैतिकी प्राकृतिक तथ्यों से ही निरूपित होती है। अतः एक का अध्ययन दूसरे के आलोक में ही किया जा सकता है। इस प्रकार भूगोल के दोनो विभाग सामान्य एवं विशेष अर्थात् क्रमबद्ध एवं प्रादेशिक एक दूसरे के पूरक हैं।

जेम्स ने वरेनियस के भौगोलिक योगदानों से प्रभावित होकर इनकी बहुत प्रशंसा की है। जेम्स के अनुसार इन्होंने भूगोल के अध्ययन क्षेत्र एवं अध्ययन वस्तु को 100 से भी अधिक वर्षों तक प्रभावित किया।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. रामनरेश विरले भौगोलिक चिन्तन का विकास पृ0सं0 325
2. डॉ0 चतुर्भुज मामोरिया एवं डा0 वी0 एल0 शर्मा
